International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(4): 65-70
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com
Received: 24-06-2026
Accepted: 18-07-2026
Publish : 20-07-2026

मनोज कुमार पांडेय
शोधकर्त्ता, शिक्षापीठम्,
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि. वि.,
नई दिल्ली

डॉ. शिवदत्त आर्य
सहायकाचार्य, शिक्षापीठम्,
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि. वि.,
नई दिल्ली

Correspondence:
मनोज कुमार पांडेय
शोधकर्त्ता, शिक्षापीठम्,
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि. वि.,
नई दिल्ली

भाषायी कौशलों के विकास में सूचना संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका

मनोज कुमार पांडेय, डॉ. शिवदत्त आर्य

सारांश (Abstract)

वर्तमान समय सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology—ICT) का युग है। शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में ICT का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। भाषा शिक्षण भी इससे अछूता नहीं है। ICT के माध्यम से विद्यार्थियों में श्रवण, वाचन (बोलना), पठन तथा लेखन जैसे भाषायी कौशलों का अधिक प्रभावी, रुचिकर एवं स्थायी विकास संभव हुआ है। डिजिटल संसाधनों, स्मार्ट कक्षाओं, भाषा प्रयोगशालाओं, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, मोबाइल अनुप्रयोगों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता(ArtificialIntelligence) आधारित उपकरणों ने भाषा शिक्षण को अधिक संवादात्मक एवं विद्यार्थी-केंद्रित बनाया है। इसमें ICT के प्रमुख उपकरणों, उनके शैक्षिक उपयोग, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ, भाषा शिक्षण में ICT के लाभ, चुनौतियाँ तथा भविष्य की संभावनाओं का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ICT भाषा अधिगम को अधिक प्रभावी, सुलभ, सहभागी तथा गुणवत्तापूर्ण बनाती है। उचित प्रशिक्षण, तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता तथा डिजिटल साक्षरता के माध्यम से भाषा शिक्षण की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार किया जा सकता है।

मुख्यशब्द- भाषा शिक्षण, आईसीटी चुनौती, निष्कर्ष, नवाचार, बहुभाषिक भारत

भूमिका

भाषा मानव जीवन का सबसे प्रभावशाली संप्रेषण माध्यम है। व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं, ज्ञान तथा अनुभवों को भाषा के माध्यम से व्यक्त करता है। किसी भी समाज के सांस्कृतिक, सामाजिक एवं बौद्धिक विकास का आधार भाषा होती है। इसलिए भाषा शिक्षण का उद्देश्य केवल भाषा का ज्ञान देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में प्रभावी संप्रेषण क्षमता विकसित करना भी है।

21वीं शताब्दी में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन किए हैं। कंप्यूटर, इंटरनेट, स्मार्टफोन, स्मार्ट बोर्ड, भाषा प्रयोगशालाएँ, डिजिटल पुस्तकालय, ऑनलाइन शिक्षण मंच तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरणों ने भाषा शिक्षण को अधिक प्रभावशाली, आकर्षक एवं विद्यार्थी-केंद्रित बना दिया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) में भी डिजिटल शिक्षा तथा ICT आधारित शिक्षण को विशेष महत्व दिया गया है। नीति के अनुसार डिजिटल तकनीकों का उद्देश्य केवल तकनीकी ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के अधिगम अनुभव को समृद्ध बनाना है। भाषा शिक्षण में ICT के उपयोग से विद्यार्थियों के श्रवण, बोलने, पठन तथा लेखन कौशलों का समग्र विकास संभव होता है।

वर्तमान समय में YouTube, DIKSHA, Google Classroom, Google Meet, Zoom, Language Lab, Kahoot, Duolingo, Google Forms, ChatGPT तथा अन्य AI आधारित उपकरण भाषा अधिगम को अधिक प्रभावी और रोचक बना रहे हैं। इन साधनों के माध्यम से विद्यार्थी अपनी गति के अनुसार सीख सकते हैं, अभ्यास कर सकते हैं तथा त्वरित प्रतिपुष्टि प्राप्त कर सकते हैं।

भाषा शिक्षण को प्रभावशाली और गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए ICT का समावेश न केवल समय की मांग है, बल्कि यह बहुभाषिक भारत में भाषा शिक्षा की दिशा को नवाचार की ओर अग्रसर करता है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ अनेक भाषाएँ, बोलियों और लिपियाँ अस्तित्व में हैं। यहाँ की भाषिक विविधता भारत की सांस्कृतिक और बौद्धिक समृद्धि की प्रतीक है। भारतीय संविधान द्वारा 22 भाषाओं को आठवी अनुसूची में मान्यता दी गई है, जबकि देश में सैकड़ों क्षेत्रीय भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलन में है। इस भाषिक परिदृश्य में भाषा शिक्षण केवल शैक्षणिक आवश्यकता नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और संप्रेषण की सशक्त साधना है।भाषा शिक्षण की इस जटिलता और विविधता को सरल, व्यवस्थित तथा रोचक बनाने के लिए आधुनिक युग में सूचना और संचार तकनीकी (UCT) एक वरदान सिद्ध हो रही है।।CT के माध्यम से शिक्षक केवल सूचना प्रदाता नहीं रह जाते, बल्कि एक मार्गदर्शक, सृजनकर्ता और संवाद-संवर्धक के रूप में विद्यार्थियों के अधिगम में सहायक बनते हैं। हिंदी, अंग्रेज़ी और संस्कृत जैसी प्रमुख भाषाओं के शिक्षण में ICT की भूमिका बहुआयामी है चाहे वह व्याकरण शिक्षण हो, शब्दावली का अभ्यास हो, या फिर भाषिक कौशलों का व्यावहारिक अनुप्रयोग।

नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार मातृभाषा में आरंभिक शिक्षा, त्रिभाषा सूत्र और डिजिटल सामग्री के प्रयोग से भाषा अधिगम अधिक प्रभावशाली और लोकतांत्रिक बना है। ICT के उपयोग से शिक्षा केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि छात्रों के हाथों में मोबाइल, टैबलेट और कंप्यूटर के माध्यम से अन्य क्षेत्रो मे भी विस्तार की है ।

भाषा शिक्षा- भाषा' शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातु से बना है जिसका अर्थ है बोलना या कहना अर्थात् भाषा वह है जिसे बोला जाए।

प्लेटो ने सोफिस्ट में विचार और भाषा के सम्बन्ध में लिखते हुए कहा है कि विचार और भाषा में थोड़ा ही अंतर है। विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है और वही शब्द जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।

स्वीट के अनुसार ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।

वेन्द्रीय कहते हैं कि भाषा एक तरह का चिह्न है। चिह्न से आशय उन प्रतीकों से है जिनके द्वारा मानव अपना विचार दूसरों के समक्ष प्रकट करता है। ये प्रतीक कई प्रकार के होते हैं जैसे नेत्रग्राह्य, श्रोत्र ग्राह्य और स्पर्श ग्राह्य। वस्तुतः भाषा की दृष्टि से श्रोत्रग्राह्य प्रतीक ही सर्वश्रेष्ठ है।

भाषा, मानव-समूह के परस्पर विचार-विनिमय और भावों की अभिव्यक्ति का साधन है।

राष्ट्रीय शिक्षानिति (Nep 2020)-

भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में आईसीटी के द्वारा भाषा के अधिगम में अनिवार्य सहायक रूप में माना है. विद्यालय में स्मार्ट क्लास ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म हिंदी अंग्रेजी और संस्कृत के भावार्थ में ई संसाधन का प्रयोग किया जा रहा है. भाषा शिक्षण और अधिगम में आईसीटी का प्रयोग से बहोत ही सुगमता आयी है

विद्यालय में संस्कृत भाषा के प्रति अधिगम रुचि पूर्णता के लिए आईसीटी उपयोगी है हिंदी भारत में राष्ट्रभाषा के तौर पर शिक्षण कराया जाता है परंतु अहिंदी भाषा राज्यों में आईसीटी द्वारा हिंदी भाषा कार्यक्रम भी रुचि पूर्णता से हो पता है अंग्रेजी जो अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में सभी जगह प्रचलित है उसे भी भारत देश में कई राज्यों में कठिन माना जाता है जिसका भाषा के तौर पर अधिगम के प्रति रूचि उत्पन्न की जा सकती है आईसीटी के माध्यम से विभिन्न आयु के विभिन्न विद्यालयों में छात्र तकनीकी का प्रयोग करते हुए सुगमता से रुचि पूर्णता से अधिगम कर सकते है।

ICT का विकास एवं भारत में क्रियान्वयन

भारत में ICT के प्रयोग को राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA) के अंतर्गत विशेष महत्व दिया गया।

वर्ष 2004 में इसकी शुरुआत हुई और 2010 में माध्यमिक शिक्षा में ICT को सुदृढ़ बनाने हेतु संशोधन हुआ।150 से अधिक स्मार्ट स्कूलों की स्थापना की गई थी। ई-बस्ता पोर्टल, दीक्षा ऐप, एनसीईआरटी की डिजिटल लाइब्रेरी आदि जैसे संसाधनों को विद्यालयों में उपयोग हेतु प्रस्तुत किया गया। यह सभी प्रयास ICT को शिक्षण की मुख्यधारा में लाने हेतु किये गए हैं।

भाषा शिक्षण में ICT आधारित सामग्री

- **श्रव्य सामग्री**

माइक्रोफोन, ऑडियो रिकॉर्डिंग, पॉडकास्ट आदि

व्याकरण सुनाकर सीखने के लिए ऑडियो पुस्तकों का प्रयोग

- **दृश्य सामग्री**

चार्ट, ग्राफ, एनिमेशन, प्रेजेंटेशन आदि

बहुभाषिक कक्षा में अर्थ स्पष्टता हेतु चित्र आधारित शिक्षण

- **श्रव्य-दृश्य सामग्री:**

यूट्यूब वीडियोज़, भाषा अभ्यास सॉफ्टवेयर, डिजिटल पाठ्यपुस्तकें

स्मार्ट क्लासरूम में प्रोजेक्टर आधारित भाषा शिक्षण

भाषा के श्रवण, वाचन, पठन और लेखन कौशलों के विकास हेतु कंप्यूटर, इंटरनेट, स्मार्ट कक्षा, मोबाइल एप्स, ऑडियो-वीडियो सामग्री एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म का शैक्षिक उपयोग है।

हिंदी- ई-सामग्री, कविताओं के ऑडियो, व्याकरण अभ्यास सॉफ्टवेयर।

अंग्रेजी- ऑनलाइन स्पीकिंग टूल्स, वीडियो लेक्चर, ई-डिक्शनरी।

संस्कृत- श्लोकों का ऑडियो-उच्चारण, ई-ग्रंथ, डिजिटल शब्दकोश।

भाषायी कौशल की अवधारणा

भाषा शिक्षण का उद्देश्य केवल भाषा का ज्ञान देना नहीं, बल्कि भाषा का प्रभावी प्रयोग करना सिखाना है। भाषायी कौशल वे क्षमताएँ हैं जिनके माध्यम से व्यक्ति भाषा को समझता तथा अभिव्यक्त करता है। सामान्यतौर पर भाषा के चार प्रमुख कौशल माने जाते हैं—

जिसमे सुना बोलना पढ़ना और लिखना है।

सुनना-भाषा शिक्षण कौशल में सुनने का विशेष महत्व है क्योंकि अच्छे से सुनेंगे नहीं तो अच्छे से लिख नहीं पाएंगे, कक्षा में, प्रयोगशाला में, आईसिटी उपकरण रेडियो, टेप रिकॉर्डर, वीडियो आदि द्वारा सुनकर समझकर भाषा का ज्ञान सरलता से ग्रहण कर सकते हैं

ICT के माध्यम से ऑडियो सामग्री, पॉडकास्ट, डिजिटल कहानियाँ तथा वीडियो व्याख्यान श्रवण कौशल को प्रभावी बनाते हैं।

बोलना-भाषा प्रयोगशाला में बालकों को सही भाषा उच्चाण हो इस बात पर ध्यान देना आवश्यक है। आईसीटी में टेप रिकॉर्ड यदि श्रवण कर शुद्ध भाषा बोला जाए तो यह अभ्यास बोलने से सशक्त बना देगा। कछा मे वो बाहर मौखिक अभि व्यक्ति के लिए भाषा का उचीत ढंग से बोलना आवश्यक है।

पढ़ना-यह भाषा के लिखित रूप पर आधारित है, भाषा शिछण मे पहले बोलना फिर पढ़ना सिखाते है पढ़ना संप्रेशन का प्रभावशाली साधन है, जिसमे ict के प्रयोग द्वारा पढ़ने मे रूचि उतत्पन्न किया जा सकती है AI आधारित स्पीकिंग टूल तथा ऑनलाइन चर्चा मंच विद्यार्थियों के उच्चारण, प्रवाह एवं आत्मविश्वास में वृद्धि करते हैं।

यदि पढ़ना भाषा कौशल शिक्षण मे हो जाये तो पढाई भी अच्छी होती है मौन पाठ से गति आती है और अर्थ ग्रहण में उपयोगी होती है द्रुत पाठ का अभ्यास ईसिटी द्वारा किए जा सकते हैं जो अधिगम मे सहायक सिद्ध होगा।

लिखना - यह भाषा ज्ञान भंडार से संबंधित है,यह वाक्य संरचना, वाक्य बोध, अनुच्छेद निर्माण के कौशलो को विकसीत करने मे सहायक है।

भाषा कौशल शिक्षण में छात्रों के भाव प्रकाशन और अधिगम हेतु बोलने के साथ लिखने का भी अभ्यास आवश्यक है जिसमे शिक्षक द्वारा ict के प्रयोग द्वारा उचित वाक्य संरचना, शब्दावली चयन, व्याकरण कि त्रुटि का ज्ञान रखना आवश्यक है जिससे भाषा एक सुन्दर, त्रुटि रहित, अस्पस्ट लेखन का निर्माण है भाषा शिक्षण शिक्षक सामग्री निर्माण करता है जिसमें श्राव दृश्य सामग्री आती है। चार प्रमुख कौशल भाषा शिछण मे आवश्यक है।

इन कौशलो को विकषित करना ही प्रधान है भाषा शिक्षण मे समय, विद्यार्थी कि संख्या, आवश्यक अस्तर इत्यादि का ज्ञान होना आवश्यक है प्रथम द्वितीय भाषा के संदर्भ में एक ही कक्षा में पर्याप्त अंतर होता है जो शिक्षण पद्धतियां हैं, प्राचीन में प्रत्यक्ष प्रणाली, अनुवाद प्रडाली, तथा परंपरागत प्रणाली चलती रही है। नवीन प्रणाली मे व्यतिरेक,, तुलनात्मक, क्रमबद्ध, प्रकार्यत्मक, संरचनात्मक, तथा शुछम भाषा विज्ञान, मल्टी मीडिया को समाहित किया गया है द्वितीय भाषा हिंदी हो या अंग्रेजी या संस्कृत सबके लिये वर्तमान संदर्भ में शिक्षण हेतु अलग सामग्री निर्माण करना आवश्यक है।

भाषायी कौशलों के विकास में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) की भूमिका

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) ने भाषा शिक्षण की प्रकृति और प्रक्रिया दोनों को परिवर्तित कर दिया है। पहले जहाँ भाषा शिक्षण मुख्यतः पाठ्यपुस्तक, ब्लैकबोर्ड और व्याख्यान पद्धति तक सीमित था, वहीं आज स्मार्ट बोर्ड, डिजिटल सामग्री, भाषा प्रयोगशालाएँ, ऑनलाइन शिक्षण मंच, मोबाइल एप तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित उपकरणों ने इसे अधिक प्रभावी, संवादात्मक तथा विद्यार्थी-केंद्रित बना दिया है।

❖ श्रवण कौशल के विकास में ICT की भूमिका

श्रवण भाषा अधिगम का प्रथम और सबसे महत्वपूर्ण कौशल है। ICT के माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ, उच्चारण, संवाद तथा भाषण सुनकर भाषा को अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं।

प्रमुख ICT साधन

- YouTube शैक्षिक वीडियो
- Podcast
- DIKSHA Portal
- PM e-Vidya
- Language Lab
- Audio Books

लाभ

- शुद्ध उच्चारण का ज्ञान होता है
- विभिन्न भाषायी शैलियों से परिचय हो पाता है
- सुनकर समझने की क्षमता में वृद्धि कि जाती है
- एकाग्रता एवं शब्द भंडार का विकास होता है

❖ बोलने (वाचन) कौशल के विकास में ICT की भूमिका

ICT विद्यार्थियों को बोलने का पर्याप्त अवसर प्रदान करती है। ऑनलाइन चर्चा, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग तथा AI आधारित स्पीकिंग टूल विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ाते हैं।

उपयोगी ICT उपकरण

- Google Meet
- Zoom
- Microsoft Teams
- Language Lab
- Duolingo
- ChatGPT (संवाद अभ्यास हेतु)

लाभ

- उच्चारण में सुधार।
- संप्रेषण कौशल का विकास।
- आत्मविश्वास में वृद्धि।
- सार्वजनिक अभिव्यक्ति का विकास।

❖ पठन कौशल के विकास में ICT की भूमिका

डिजिटल पुस्तकालय, ई-पुस्तकें एवं ऑनलाइन सामग्री विद्यार्थियों की पठन क्षमता को समृद्ध बनाती हैं।

मुख्य साधन

- e-Library
- NROER
- NCERT e-Books
- Google Books
- DIKSHA

लाभ

- विभिन्न प्रकार की अध्ययन सामग्री उपलब्ध।
- स्व-अध्ययन की आदत विकसित।
- शब्द भंडार एवं समझ में वृद्धि।
- आलोचनात्मक चिंतन का विकास।

❖ लेखन कौशल के विकास में ICT की भूमिका

ICT विद्यार्थियों के लेखन कौशल को अधिक व्यवस्थित एवं सृजनात्मक बनाती है।

मुख्य उपकरण

- MS Word
- Google Docs
- Grammarly
- ChatGPT
- Google Forms
- Blogging Platform

लाभ

- वर्तनी एवं व्याकरण में सुधार।
- रचनात्मक लेखन का विकास।
- त्वरित प्रतिपुष्टि।
- सहयोगात्मक लेखन की सुविधा।

भाषा शिक्षण में प्रयुक्त प्रमुख ICT उपकरण

- स्मार्ट बोर्ड
- प्रोजेक्टर
- कंप्यूटर एवं लैपटॉप
- टैबलेट एवं स्मार्टफोन
- Google Classroom
- DIKSHA Portal
- PM e-Vidya
- SWAYAM
- YouTube
- Kahoot
- Quizizz
- Language Lab
- Google Forms
- Microsoft Teams
- Zoom
- ChatGPT एवं अन्य AI आधारित उपकरण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) एवं ICT

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 डिजिटल शिक्षा को विद्यालयी शिक्षा का महत्वपूर्ण भाग मानती है। नीति में डिजिटल सामग्री, ऑनलाइन शिक्षण, वर्चुअल लैब, बहुभाषिक शिक्षा तथा तकनीक-सक्षम शिक्षण पर विशेष बल दिया गया है। भाषा शिक्षण में ICT के माध्यम से विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता, रचनात्मकता तथा भाषा दक्षता को विकसित करने की अनुशंसा की गई है।

ICT आधारित व्याकरण शिक्षण की पद्धतियाँ

★ सूत्र पद्धति-

संस्कृत के जटिल सूत्रों को ICT द्वारा एनिमेटेड चार्ट, उदाहरण व ऑडियो-वीडियो से रोचक बनाया जा सकता है।

★ पाठ्यपुस्तक पद्धति-

ई-बुक्स, इंटरैक्टिव क्विज़, डिजिटल शब्दकोश के माध्यम से व्याकरण को सरल रूप में प्रस्तुत करना।

★ विश्लेषणात्मक पद्धति

चार्ट, विडियो क्लिपिंग्स, आगम-निगमन के प्रयोग से व्याकरण नियमों की गहन व्याख्या करना।

★ प्रासंगिक पद्धति

सीधे जीवन से जुड़े उदाहरणों को वीडियो और संवाद द्वारा प्रस्तुत करना।

★ प्रयोगात्मक पद्धति

छात्र स्वयं ICT टूल्स का प्रयोग कर भाषा प्रयोग करें—जैसे संवाद निर्माण, वर्ण प्रयोग, ऑनलाइन व्याकरण परीक्षण आदि

त्रिभाषा शिक्षण में ICT की भूमिका

ICT तीनों भाषाओं—हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत—के लिए भाषा प्रयोगशाला के रूप में कार्य कर सकती है।

- हिंदी में संवाद और समाचारों के वीडियो बनाना।
- अंग्रेजी में वर्चुअल स्पीकिंग क्लास।
- संस्कृत में श्लोकों का श्रवण व अर्थ व्याख्या।

यह त्रिभाषीय संतुलन ICT के माध्यम से विद्यार्थियों को बहुभाषी बनाने में सहायक होता है।

भाषा शिक्षण में ICT के लाभ

- भाषा सीखना रुचिकर बनता है।
- विद्यार्थी सक्रिय रूप से सीखते हैं।
- व्यक्तिगत गति से सीखने का अवसर मिलता है।
- त्वरित मूल्यांकन एवं प्रतिपुष्टि संभव होती है।
- सहयोगात्मक अधिगम को बढ़ावा मिलता है।
- डिजिटल साक्षरता विकसित होती है।
- शिक्षण अधिक प्रभावी एवं गुणवत्तापूर्ण बनता है।

भाषा शिक्षण में ICT के समक्ष चुनौतियाँ

यद्यपि ICT भाषा शिक्षण को प्रभावी बनाती है, फिर भी इसके उपयोग में अनेक चुनौतियाँ हैं—

- विद्यालयों में पर्याप्त डिजिटल संसाधनों का अभाव है।
- इंटरनेट की सीमित उपलब्धता है।
- शिक्षकों का अपर्याप्त ICT प्रशिक्षण है।
- तकनीकी समस्याएँ एवं रख-रखाव ठीक नहीं है।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच डिजिटल असमानता है।
- विद्यार्थियों का सोशल मीडिया की ओर अधिक आकर्षित होना है।
- गुणवत्तापूर्ण हिंदी एवं भारतीय भाषाओं की डिजिटल सामग्री का अभाव है।

सुझाव

भाषायी कौशलों के विकास हेतु प्रत्येक विद्यालय में स्मार्ट कक्षा एवं इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध कराई जाए। एवं भाषा शिक्षकों को नियमित ICT प्रशिक्षण दिया जाए। और भाषा प्रयोगशालाओं की स्थापना की जाए। जिसमे DIKSHA, SWAYAM, PM e-Vidya तथा अन्य भारतीय डिजिटल प्लेटफॉर्म का अधिक उपयोग किया जाए।AI आधारित उपकरणों का जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग किया जाए। जो विद्यार्थियों को परियोजना आधारित एवं सहयोगात्मक अधिगम के अवसर दे। डिजिटल सामग्री हिंदी, संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं में भी पर्याप्त मात्रा में विकसित की जाए।

ऑनलाइन एवं ऑफलाइन शिक्षण का समन्वित (Blended Learning) मॉडल अपनाया जाना चाहिए।

निष्कर्ष-

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने भाषा शिक्षण को नई दिशा प्रदान की है। ICT के माध्यम से श्रवण, बोलने, पठन तथा लेखन जैसे सभी भाषायी कौशलों का संतुलित एवं प्रभावी विकास संभव हुआ है। डिजिटल संसाधन विद्यार्थियों की रुचि, सहभागिता, रचनात्मकता तथा आत्मविश्वास में वृद्धि करते हैं। साथ ही शिक्षक भी अधिक प्रभावशाली एवं नवाचारी शिक्षण कर पाते हैं।

ICT के प्रभावी उपयोग के लिए तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता, प्रशिक्षित शिक्षक, गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री तथा उचित शैक्षिक नीति आवश्यक है। यदि इन पहलुओं पर समुचित ध्यान दिया जाए, तो ICT भाषा शिक्षण की गुणवत्ता को बना सकती है, तथा 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप दक्ष शिक्षार्थियों का निर्माण कर सकती है। भाषा शिक्षण में ICT का समावेश शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली, बहुआयामी एवं संवादात्मक बनाता है। हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत के संदर्भ में ICT विद्यार्थियों को न केवल भाषा सिखाने में सहायक है, बल्कि उन्हें भाषा का उपयोग आत्मविश्वास के साथ करने हेतु प्रेरित भी करता है। इस प्रकार ICT के माध्यम से भाषा शिक्षा को नई दिशा मिलती है जो ज्ञान आधारित समाज निर्माण की दिशा में एक ठोस कदम बढता है।

संदर्भग्रन्थ

- शर्मा, रमेश (2019). सूचना और संचार तकनीकी, ज्ञान गंगा प्रकाशन, नई दिल्ली।
- पांडे, अनामिका (2021). भाषा शिक्षण पद्धतियाँ, विद्या निकेतन प्रकाशन, लखनऊ।
- Rajeev, S. (2022). ICT for Language Learning. University Press, Oxford
- Joshi, M. (2020). Modern Trends in Teaching Grammar. Orient publishing, Delhi:
- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 (भारत सरकार)**
- Sharma, R. (2019). सूचना और संचार तकनीकी. ज्ञान गंगा प्रकाशन, नई दिल्ली।
- UNESCO (2023). ICT in Education: A Global Report.
- पांडे, अनामिका (2020), भाषा शिक्षण पद्धतियाँ, विद्या निकेतन प्रकाशन, लखनऊ।

- Rajeev, S. (2021). ICT for Language Learning. University Press. . Oxford
- Joshi, M. (2020). Modern Trends in Teaching Grammar. Orient Publishing, Delhi.
- Mishra, A. (2018). ICT और शिक्षा. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
- National Council of Educational Research and Training (NCERT). ICT Curriculum Framework.
- Kulshreshtha, S. (2017). Language Pedagogy in India. Allied Publishers.
- Rao, D.B. (2016). Computer Education and Educational Technology. Discovery Publishing House.
- Bansal, R.K. & Harrison, J.B. (2011). Spoken English: A Manual of Speech and Phonetics.
- Singh, Y.K. (2010). Teaching of Sanskrit. APH Publishing Corporation.
- Jain, R. (2014). भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा शिक्षण. प्रकाशन संस्थान, दिल्ली।
- Gagne, R.M. (2005). The Conditions of Learning and Theory of Instruction. Wadsworth.
- Vygotsky, L.S. (1978). Mind in Society: The Development of Higher Psychological Processes.
- Kumar, K. (2007). What is Worth Teaching. Orient Black Swan.
- दीक्षा पोर्टल (https://diksha.gov.in) – डिजिटल शिक्षण सामग्री
- NCERT (2021). Learning Outcomes at the Elementary Stage.
- Mohanty, A. (2020). Multilingual Education in India: The Case for English Plus. Orient Black Swan.
- NCERT (2021). Learning Outcomes at the Elementary Stage.
- Mohanty, A. (2020). Multilingual Education in India: The Case for English Plus. Orient
- IGNOU – Language Teaching and Learning अध्ययन सामग्री।
- अग्रवाल, जे. सी. – शिक्षा मनोविज्ञान।
- पाण्डेय, रामशकल – शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी।

अंतर्जाल -

- Science Direct.com
- https://www.sciencedirect.com
- eGyanKosh
- https://egyankosh.ac.in
- Central Institute of Educational Technology
- https://ciet.ncert.gov.in
- Webnode
- https://actualizacion-disciplinar5.webnode.
- Navodaya
- https://navodaya.gov.in
- ResearchGate
- https://www.researchgate